

आयह्यानस्या



उ

वा

प

द

न



ता

प

न

द

नवज्ञानयोगनयवसुधर ॥

ॐ नमो केशवभक्त्युत्तमस्य वदन्तिरुत्तम ॥ भक्त्या वदन्ति ॥



नमो केशवभक्त्युत्तमस्य

यज्ञकृष्णार्जुनपाद



हो ना ॥
विश्ववर्धना

यज्ञकृष्णार्जुनपाद



वज्रा कूलकोमल



यज्ञकृष्णार्जुनपाद



मता

शिवपाद

हो ना

कूलकोमल ॥

ॐ नमो केशवभक्त्युत्तमस्य वदन्तिरुत्तम ॥ भक्त्या वदन्ति ॥

२ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ यजमानं यूप्यसाधनं याचकं । जूयादि । वाकं ॥ यज
मानं स्यात्तुम्कोदं ॥ जूम्को कार्यं केलसाधनं दृडा निमित्तं ॥ यूप्यसाधनं स
बुद्धं न निवर्तयन् सवर्तु ॥ किं न सानन्दसूननायकं रूपावानस
म्लानं कामप्रद । वागी ॥ भवनं दम्बु वा युवयदा वामादिव कृष्णं वा विष्टाक
विनासं कुत्तं रुयसाम् रूजयगादिमां ॥ सिद्धिं नम्बु क्रिया नम्बु वृद्धिं नम्बु धना
भापू विनम्बु सनी नम्बु निनम्बु गृह गव ॥ सर्वे विष्णु प्रणमनं सर्वं नम्बु नि क
नं गुरुं । जूय ४ युग ५ काम ५ लक्ष्मि सन निवर्तनं ॥ यथावानप्रदानां कवय
रुवगु वानल गद दव विष्ठागल नम्बु निर्वव गुवानल ॥ यूप्यसाधनं समर्थयामि

५३

॥ ॥ वाक्म (नन सुशार्थ ॥ गुरुनमस्कान ॥ न्यास । जूर्णपात्र पूजा । जूत्तदृजा । गता
दानार्थ ॥ ॥ दानदवगल्यन्दमासनं नमयूप्यनम ॥ ॐ नत्वाजामि वृद्धं ॥
वन्दमानं सुदासास्त्रियजमाना रु विरि ॥ जूरुदमाना वरु ॥ रुवाशु नृ ॥ समानः
जूय ४ युमा ॥ ॐ दवस्य लास विरु ४ युसव विनावा दुर्त्या दृक्को रुसात्य ॥ ॐ
गलनं लागलयनि ० रुवाम रु प्रिया ॥ ला प्रिययनि ० रुवाम रु निधी नत्वा
निधियनि ० रुवाम रु वसामम ॥ ॥ जूरुमजा निगर्द्धमात्ममजा सिगर्द्ध ॥ ॐ वृत्त
स्यनजु निजुनया जूरुमदिरा निकु गुमर्द्ध नवृथ्य यदि दययुवसमग प्रजा नद
स्मां गुरु विनं ॥ वरि विग ॥ ॐ यत्ना निष्ठ ॥ गथा त्रस्य पादा दणी थसक रुसासाजू

स्य। वि भावदातृ बरा नानवा गिमहा देवो मर्त्यो रंजु विवेक ॥ द्वा नाद विन न्वस्य वि (स्प) ॥
 वृणाददले जू ॥ उ नू वाचसा धमा पत्यमाना ॥ ॐ दिन (व्य) गर्ह ॥ समवर्त गा (ग्र) ॥
 नयजा ग ॥ प विन कज्जासा गा सव धन य विवा न्या मू ने मा क स्मे देवा य रु विवा विव
 म ॥ ॐ स फ ज व य ॥ यु नि लि गा ॥ स नी न स र्क दू कि स द मू य मा द ॥ स का य ॥ स य ग ल
 क मी य सु ग जा ग नो जू स व्र जो स ग स दो य दे वो ॥ ॐ वृ क्क ज रू नं य थ म यून स्रा दि ॥
 ली म न ॥ स नू वा व न जू व ॥ स वृ धा ड प मा जू य विष्ठा ॥ स नै थ या नि म ॥ स नै थ वि
 व ॥ ॐ विष्ठा न ना ट म नि विष्ठा मे फ रू विष्ठा ॥ सून सि विष्ठा धू वा सि व व्र व म
 सि विष्ठा व त्या ॥ ॐ नम ॥ स मू वा य म थार वा य च न म ॥ ॐ क ना य च म य रू क ना य

च नम ॥ नि वा य य नि वृ त न य च ॥ जू वा रु न स्य व न च न ना द न य र्थ न म धू
 यान म दी धान म रू द नै वे द न म ॥ द्वा ना च ल वि (व्य) न त्स र्व म्य नि व रू ल म म्मु ॥
 स म्पू र्ण क ल सा य रू द मा स ली न म ॥ ॐ य न म ॥ ॐ जू जि य क ल ल म क्रा ला ॥
 विष्ठा लि द व ॥ पू न नू थानि व रू स सा न ॥ स रू म धू द नू क ना य य स गी यून म्मा
 विष्ठा ना द यि ॥ ॐ प क्क न य ॥ स न स्य गी म भिय नि स रू न स स न स्य गी रु य क्क ॥
 अ सा दे (व्य) रु व त्स नि ग ॥ ॐ रू म भ ग ॥ ॐ जू मू न स न स्य गी रु दू रु रू मी स न
 ना य नू धू जू नि धू मा मे नू व ग रू या जू गी न रू लू थानि विष्ठा म या ॥ ॐ नि गा नि ॥
 व स नि गी जू गी म न गी यू ना सा दि व मू ल ग नि मू व न च वि ष्ट जं नि धी ना स

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

[illegible]

48

न ५

[illegible]

वाचन॥ पान्त्रकेनाम्हावविकलकाय॥ सल्लभनधनिनच्छायन
 के॥ नासिचके॥ कल्लखकाय॥ आउमामलवद्धाय॥ गुगुननादाव
 नके॥ कल्लखसकाय॥ सरुं॥ ॐ आहरुलनी॥ ज्ञानगि॥ ॐ गजासि
 ॥ ॐ मनाशगि॥ युगिष्ठा॥ वाक्कलत्रसकल्य॥ दक्षिण॥ वाचन॥ कल
 लसल्य॥ वेदार्चलयाय॥ ॐ आतिथ्यकल॥ न्यासलिकाय॥
 कललार्जदिनविसर्जलयाय॥ ॐ उदयकमस॥ पूर्वपूजासच
 यकेददेन॥ वलिक्कायाथनलारवू॥ कल्लख॥ मिनिवगनाखधन॥
 ॐ उजागलस॥ ॐ गगससायग॥ दूरवा॥ विरवा॥ द्वासकनगयावः

यजमानकल ॥ लिखक ॥ ॐ देव स्यात्वा ॥ ॐ ज्ञेयिना ॥ चन्दनादि
सल्लभनञ्जिर्विद ॥ ॐ दृष्टवि ॥ भायादव आययक ॥ लिगाद
यके ॥ दृक् वियक भायात्रादिन ॥ ददन ॥ द्रुमकनकन ॥ दृष्टु
॥ मद्यमंगलमाङ्गल ॥ भिवसुवार्थसाधिक ॥ सननञ्जम्वकेलगेनी
नानायलिनभाम्भुग ॥ कोमानी विसर्जलयोयपी ॥ सञ्जाय ॥ स
यसाविधाय ॥ धनममकलनञ्जम्वयामनयाविधि ॥ सगिक
द्रुयाविधान ॥ दृष्टुथञ्जुसुनकवजसमयनकाय ॥ धनञ्जुक
लसञ्जाय ॥ मामञ्जायमय ॥ ॥ दृष्टुसञ्जानिखायीय ॥ लं ॥

गलिदयक ॥ आगमसामविय ॥ ॐ दीर्घायस्त्राय ॥ सल्लभनविय
॥ ॥ सगिकद्रुयाविधान ॥ चन्द्रमलुलचाय ॥ धिनय ॥ लंमल ॥ डाहा
मल ॥ लंखाल ॥ डाहाखाल ॥ नड्याखाल ॥ सिनिथि ॥ दंगकीकयि
चसावना ॥ लङ्क ॥ पागका ॥ कुङ्कला ॥ कणव ॥ वाकलरुनीन ॥ नड
यागा ॥ दक्षिणा ॥ धनञ्जुमलुलसने ॥ सल्लभनसदवनन ॥ सञ्जालि
मि ॥ ज्ञद्वानपाम ॥ का ॥ विकन ॥ पूवा ॥ म्वो ॥ माम ॥ नुनगा ॥
थकादिन ॥ पूजाआययक ॥ ज्ञयादि ॥ ॐ येमानस्य ज्ञम्वकस्यः
चणक ॥ क ॥ दकल ॥ ल ॥ द ॥ ज्ञानिमिथार्थपुष्कराज

नमः सर्वयामि ॥ शुद्ध भक्त ॥ सिद्धि नमु ॥ यथा वान ॥ वाक्कलस्य
 पूजा रुदि द्वाय ॥ वाक्कलन ॥ ज्ञादि ॥ सुशोच्य ॥ द्वात्राचलदिक्
 गत्य ॥ वाक्कल पूजा ॥ भक्तिक यत्निक ॥ यविनस्वस्तिक वाय ॥ ला
 सालावरुय ॥ स्वस्तिक संगय ॥ सिद्धि वन ॥ ॐ गववाय ॥ निर्मल
 न ॥ ॐ ज्ञा वाचद ॥ ज्ञा च पागु लखन हाय ॥ ॐ द वस्यत्वा ॥ क
 ले भक्त केवत न न क ॥ सागु ॥ शुद्ध भक्त ॥ ज्ञा गन्यदि ॥ भक्तिः
 कस्वानविय ॥ मनी रू गा उवाय ॥ ॐ ज्ञा मिर्मिर्द्धा ॥ ॐ गगानमि
 न्द ॥ मनी रू गा दवा स भक्तनत्वाय ॥ ॐ स्वस्तिक वाचन ॥ शुद्धाय ॥ ग

उगानवि कनकायाव कपालसंगय लाल गस गुगास ॥ वेद
 ॥ ॐ का लुग का लुग ॥ का उद्ग ॥ ॐ दा वायि स्वा ॥ चन्दनादि ॥ स भ
 न ॥ ज्ञा मिर्द्धा ॥ स रू ॥ ॐ या रु लनी ॥ ज्ञा न नि ॥ ॐ गजा सि ॥ पुनिष्ठा
 ॥ ॐ मना ही नि ॥ चन्दम लु लनत्वाय ॥ ॐ मन्दे वा ॥ नाविक पूजाया य
 चन्दनादि दक्षिण ॥ मपा जो द्वे याय ॥ लाल गस स्वस्तिक वाय ॥ चन्द
 नादि दक्षिण ॥ निनि पूजा उ ॥ का क लेख च यशाय मल धलि
 च्चक गगय ॥ चन्दम लु लमपा द्वाय ॥ निनि समसाव निविय ॥ स्वा
 उ लेखन हाय ॥ भक्तानि ॥ ववन ॥ का क लेखन दे गा हाया ॥ ॐ दे भक्तनवा
 ना जवदस्य

मृवा १२ सस नू रिवा सम हि दव हि नै यदाय ॥ सक ल रवाय राव खाल
 ने क वाल स द्य के ॥ ॐ यद् न ल म ऊ य ग स व स सा व द्वा वा व प गि कः
 लान् कि मि नि त्रामा स्या य ॥ य भाषा ॥ म् वान शाल ग या व च ॐ म न्द ल द्वाय
 ॥ ला ल ग द्वा या य द्वा वा ॥ न उ न श ग ॥ हि सा खा च क ॥ व लि वा ग
 या व सा ष् स य क ल द्वा य ॥ मि वा मा उ द्वा य क ॥ भा न म् लो च
 न न ० ले द व न स सि क वा य ॥ द्वा व न ला सा ल ह य ॥ ज व द्वा व स
 सि क सु ग य ॥ नि म्म ज्वा ना दि ॥ क ग्वा द ग न क ॥ व ३ य्वा व ल ख न ला य ॥
 म ग ॥ र्वा ग ॥ स ल न न ला य ॥ व स न वि य ॥ ॐ व मा य वि न म सि ॥
 भा उ स क द्वा व को न यि ने ३ ॥ ॐ स सि वा य न ॥ या द को न यि ने ३ ॥ य वि न्द ला ॥
 न म ॥ स र वा य ॥ न उ म ल ल वा य म ल न ला य व स न वि य थ सि थ नि य य माल ॥

बन्द ना दि श सि र्वा द ॥ ॐ दा र्वा य स्ता ॥ रु नि न न ला य ॥ रु नि न द्वा य ॥ ॐ
 ग ग न मि द्वा ॥ स र्वा य ॥ ॐ मा ॥ रु ल नि ॥ पु नि स्ता ॥ ॐ म ना द्वा नि ॥ वा द्वा
 ल ३ न स क ल्वा ॥ द कि ला ॥ वा च न का य ॥ क ल ग स ल्वा ॥ न्वा स लि का
 य ॥ वि स र्वा ॥ ॐ श डि पु क ल ॥ ॐ उ द्वा ॥ रि व क ॥ द्वा स क न न
 या व ॥ च ग सि न्द न स ल न ला य ॥ श ला र्वा दि ॥ ॐ द्वा ॥ रु वि ॥ थ का
 दि द्वा य ॥ द्वा द्वा य ॥ ग ॥ ग ॥ ग ॥ को मा नी ॥ द्वा वि र्वा क्वा
 क्वा ॥ क ल ग वा द्वा ल श दि न स म य वि य ॥ क सि क न स र्वा वि थ
 य ॥ द्वा स क न क न ॥ थ ग द्वा क न ल वि थि स मा क ॥

१३५ मखलावभविधि ॥ ॥ पागकस्मालका च उ कस्माल
वम्वनापसि (मनस प्रकाय ॥ वाक् ॥ यजमास्यमखलावभन
निमिर्था (थन कै पृथ लाजन समर्पयामि ॥ सुद्व ॥ शिदिनमु ॥
यथवान ॥ अइवेदायतान वाज (म गायवुद्धा देव ना विमु युन सव
यला जन समर्पयामि ॥ वाक् ॥ लसी ॥ अयादि ॥ सुयार्वा ॥ गुन नमस्का न ॥
न्यास ॥ अर्घ्य पाठ पडा ॥ अल पडा ॥ कलसा च ॥ अग ॥ सुद्व ॥ अग ॥ अ
गुगम्भदि ॥ वाक् ॥ ल पडा ॥ अग ॥ क पृष्ठिक स्नान काय कले अग

या ॥ व दय दया ॥ थंकादि नलासां लह ॥ स्वस्तिक सग ॥ ॥ मिर्मर्कुल
॥ उं नकाहनी ॥ उं अच वाच द ॥ अर्घ्य पाठया लं खन लाया ॥ देवस्य
त्या ॥ कले अग ॥ दिन स्नान के नै रं क ॥ अग ॥ सुद्व ॥ अग ॥ अग ॥ अग ॥ अग ॥
॥ अग ॥ क स्नान विय ॥ ओ ॥ अग ॥ अग ॥ अग ॥ अग ॥ अग ॥ अग ॥ अग ॥ अग ॥
निसार्थ कादी नलाच क ॥ स्वस्तिक वाचन व (थ ग ॥ मिथ कादी न
अर्घ्य पाठ खन लाया ॥ क स्नान विज क ॥ उं य विगु स्था ॥ अग
सग ॥ थिलाच क ॥ अं थि सव ग ॥ सिधल ॥ सग ॥ अग ॥ अग ॥ अग ॥ अग ॥

या॥ ज्ञानी वीर॥ ॐ दीर्घाय स्वा॥ सरन लय॥ ॐ या ह्यल
नि॥ ॐ मन्त्रायुनि॥ वृनिष्ठ॥ वाक्कलत्र नर्सकल्प॥ दृदि
॥ वाचन कलिहास लय॥ कलिहास विमर्ज॥ त्रिजिह्व॥ न्यास
॥ वलि विमर्ज॥ ॐ उदय नमस्तस्य॥ वलि आय रसकाय॥
क्रस्कन नया वृत्तिविकविय॥ दवम्यत्वा॥ त्रिजिह्व न्यास
॥ चन्दनादि॥ ज्ञानी वीर॥ ॐ द ह वि॥ साखि आय॥ समय विय
॥ कसिकत्रादि वचन थिय क माल॥ मरवला वचन या वि व

न॥ ॥ अथ संध्यावक या विधान॥ वन्दु मन्द लस
य॥ वसाया॥ दन कंक कयि क कल का वागका लं पाया
लिखा पा॥ अंगल साला कुल वलाय मल सहा न स दकाय
॥ कला भा चला दि॥ वाक्कल दया॥ ॥ निकै पृष्ठिका॥ लाल
रु॥ स्वस्तिक सग॥ निर्मचुल॥ नकाहन॥ अथ वाच द॥ अ
र्च पागु यो लषन लय॥ ॐ द वसात्वा॥ स्नान के र्ग न क॥ कः
लगा अदिन॥ मुनि॥ सुद भा न॥ अगुग चादि॥ ॥ निकै य
ष्टिक स्नान विय॥ नर्ग र्ग गोण्या सग न वन्दु मनु लन ला॥ स्व